Sanskrit

Sl. No.	Sem	Type of course	Name of Course	Credit	Marks
1.	i	MJC-1	व्याकरण–संज्ञा, सन्धि, सुबन्त, तिङन्तएव लकार–परिचय	06	100
2.	ii	MJC-2	संस्कृतकाव्य	06	100
3.	iii	MJC-3	संस्कृतसाहित्यका इतिहास–वैदिक एवं लौकिक	05	100
4.	iii	MJC-4	वेदएव उपनिषद्	04	100
5.	iv	MJC-5	काव्य–शास्त्र	05	100
6.	iv	MJC-6	सस्कृत–नाटक	05	100
7.	iV	MJC-7	व्याकरण–कारक एव वाच्य	05	100
8.	V	MJC-8	भारतीय दर्शन	05	100
9.	V	MJC-9	भगवद्गीता	05	100
10.	vi	MJC-10	सस्कृत गद्य साहित्य	04	100
11.	vi	MJC-11	व्याकरण–कृत्, तद्धित्एव स्त्री-प्रत्यय	05	100
12.	vi	MJC-12	पत्र–लेखन निबंधएव अनुवाद	05	100
13.	vii	MJC-13	महाकाव्य	05	100
14.	vii	MJC-14	संस्कृतकथा साहित्य–पंचतंत्रएव हितोपदेश	05	100
15.	vii	MJC-15	व्याकरण–समास एवंनामधातु	06	100
16.	viii	MJC-16	शोध पद्धति	04	100

Study Origin.com

Bachelor of Arts (Honours) Sanskrit under FYUGP
UNIVRESITY OF BIHAR, PATNA

SEMESTER-I (Pattern – 70+30=100)

MJC-1: संस्कृत व्याकरण

Theory:5 Credits+Tutorial: 1 credit= 6 credits

उद्देश्य

"मुखं व्याकरणं स्मृतम्"–संस्कृत भाषा की अवगति(समझदारी) विकसित करने हेतु महर्षि पतंजलि ने व्याकरण–शास्त्र को प्रमुख अंग के रूप में विवेचित किया है। वास्तव में, व्याकरण के ज्ञान के विना संस्कृत–वाङ्मय को समझना दुष्कर है। एतन्निमित्त यहाँ व्याकरण के प्रमुख व महत्त्वपूर्ण विषयों की जानकारी छात्रों को उपलब्ध कराने के उद्देश से लघुसिद्धान्तकौमुदी के आधार पर पाठ्यक्रम का प्रारूप प्रस्तुत है–

Unit	Prescribed Course	Number of Lectures
1	संज्ञाप्रकरण	10
2	सन्धि प्रकरण(लघु सिद्धान्त कौमुदी के अनुसार): स्वर सन्धि, व्यंजन सन्धि, विसर्ग सन्धि	13
3	सुबन्त, तिङन्त एवं लकार–परिचय	15
4	अनुवाद	12
5	Turorial	10
	Total	60

Reading List

1. शास्त्री, धरानन्द, लघुसिद्धान्तकौमुदी, मूल एवं हिन्दी व्याख्या, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
2. शास्त्री, भीमसेन, लघुसिद्धान्तकौमुदी, भैमी व्याख्या, भाग–01, भैमी प्रकाशन, दिल्ली।
3. लघुसिद्धान्त कौमुदी गोविन्द प्रसाद शर्मा चौरवम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।
4. रचनानुवाद कौमुदी कपिलदेव द्विवेदी विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

अधिगम उपलब्धिः–संस्कृत व्याकरण के अध्ययन के उपरान्त छात्र छात्राओं को निम्नलिखित उपलब्धियाँ प्राप्त होगी–

1. संस्कृत व्याकरण का ज्ञान प्राप्त कर संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता से सुपरिचित हो सकेंगें।
2. संस्कृत वर्णमाला एवं श्लोकों के शुद्ध उच्चारण का कौशल विकसित होगा।
3. संस्कृत वाक्यों, श्लोकों एवं गद्यों को समझने की सामर्थ्य–शाक्ति विकसित होगी।
4. छात्र/छात्राओं को संस्कृत भाषा में सम्भाषण की कला का ज्ञान प्राप्त होगा।
5. संस्कृत वाक्यों के निर्माण की शुद्ध एवं वैज्ञानिक कला का विकास होगा।

14/06/2023

14/6/23

Study Origin.com